अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते।।५३।।

बुद्ध्या=बुद्धि से; **विशुद्धया**=पूर्ण शुद्ध; **युक्तः**=युक्त; **धृत्या**=सात्त्विक धारण-शक्ति से; **आत्मानम्**=मन को; **नियम्य**=वश में करके; **च**=तथा; **शब्दादीन्**=शब्द आदि; **विषयान्**=विषयों को; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **रागद्वेषौ**=राग द्वेष को; **व्युदस्य**=दूर करके; **च**=तथा; **विविक्तसेवी**=एकान्त में निवास करते हुए; **लघ्वाशी**=अल्प आहार करने वाला; **यतवाक्कायमानसः**=मन, वाणी और देह को जीत कर भगवत्परायण करने वाला; **ध्यानयोगपरः**=हरिचिन्तनरूप समाधि में तत्पर; **नित्यम्**=दिन में चौबीस घण्टे; **वैराग्यम्**=वैराग्य के; **समुपाश्रितः**=आश्रित हुआ; **अहंकारम्**=मिथ्या अहंकार; **बलम्**=मिथ्या बल; **दर्पम्**=अभिमान; **कामम्**=काम; **क्रोधम्**=क्रोध; **परिग्रहम्**=प्राकृत पदार्थों के संग्रह को; **विमुच्य**=त्याग कर; **निर्ममः**=ममतारहित; **शान्तः**=शान्त पुरुष; **ब्रह्मभूयाय**=स्वरूप-साक्षात्कार के; **कल्पते**=योग्य हो जाता है।

अनुवाद

जो विशुद्ध बुद्धि से सात्त्विक धारणा के द्वारा मन को वश में करके, इन्द्रियतृप्ति के विषयों को त्याग कर, राग-द्वेष से मुक्त हुआ एकान्तवास में अल्प-आहार करता हुआ देह, मन और वाणी का संयम करके सदा भगवच्चिन्तनरूप समाधि में निमग्न रहता है तथा मिथ्या अंहकार, मिथ्या बल, मिथ्या अभिमान, काम, क्रोध और प्राकृत वस्तुओं के संग्रह को त्याग कर निर्मम और शान्त हो जाता है, वह पुरुष निःसन्देह स्वरूप-साक्षात्कार की अवस्था को प्राप्त होता है।।५१-५३।।

तात्पर्य

ज्ञान से शुद्ध हुआ पुरुष अपने को निरन्तर सत्त्वगुण के स्तर पर रखता है। इस प्रकार वह मन को वश में कर लेता है और सदा समाधि में लीन रहता है। इन्द्रियतृप्ति के विषयों में उसकी आसक्ति नहीं रहती, इसलिए वह आवश्यकता से अधिक नहीं खाता तथा देह, मन और वाणी की क्रियाओं को वश में रखता है। वह अपने को देह नहीं समझता, इसलिए मिथ्या अहंकार से रहित है। साथ ही, अनेक प्राकृत वस्तुओं के परिग्रह से देह को हृष्ट-पुष्ट बनाने की इच्छा का भी उसमें अभाव है। वह देहात्मबुद्धि से छूट चुका है, इसलिए मिथ्या गर्व नहीं करता। भगवत्कृपा से जो कुछ प्राप्त हो जाय, उसी में सन्तोष करता है, इन्द्रियतृप्ति के लिए कभी क्रोध नहीं करता। इन्द्रिय विषयों की प्राप्ति के लिए वह कुछ चेष्टा भी नहीं करता। इस प्रकार मिथ्या अहंकार से पूर्ण रूप में मुक्त होकर सम्पूर्ण प्राकृत वस्तुओं में अनासक्त हो जाता है। यही ब्रह्मभूत नामक स्वरूप-साक्षात्कार की अवस्था है। देहात्मबुद्धि से मुक्त पुरुष सदा शान्त रहता है; उसे किसी भी प्रकार उत्तेजित नहीं किया जा सकता।

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्।।५४।।